

माई आये तुम्हारे द्वार- बनी ऊँची सिड़िया  
 आये- आये तुम्हारे द्वार- बनी ऊँची सिड़िया  
 शिव- नाभी के कमल दल बैठीं ॥२॥  
 माई कर सोलह सिंगार

बनी ऊँची-----

परमहंसी की महिमा निराली ॥२॥  
 जहाँ- कर रये सिद्ध बिहार

बनी ऊँची-----

करके विचार शिला- बनी माई ॥२॥  
 तेरी महिमा अपरम्पार

बनी ऊँची-----

धाम पाँचमो बनो निरालो ॥२॥  
 माई तुम्हई सम्हारो भार

बनी ऊँची-----

ब्रम्हा- विष्णु पार न पाये ॥२॥  
 माया की अवतार

बनी ऊँची-----

वन श्री वन उति सुन्दर लागें ॥२॥  
 करें "श्रीबाबाश्री" जैकार

बनी ऊँची-----